
इकाई 1 कहानी : पूस की रात (प्रेमचंद)

इकाई की रूपरेखा

- 1.0 उद्देश्य
- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 कहानी : पूस की रात
- 1.3 कहानी का सार
- 1.4 संदर्भ सहित व्याख्या
- 1.5 कथावस्तु
- 1.6 चरित्र-चित्रण
- 1.7 परिवेश
- 1.8 संरचना शिल्प
- 1.9 प्रतिपाद्य
- 1.10 सारांश
- 1.11 उपयोगी पुस्तकें
- 1.12 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में आप कहानी के विभिन्न पक्षों की विशेषताएँ जानेंगे।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कहानी का सार बता सकेंगे तथा कहानी के महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कहानी की कथावस्तु का विश्लेषण कर सकेंगे;
- कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सकेंगे;
- कहानी के परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- कहानी की शैली, भाषा और संवाद की विशेषताएँ बता सकेंगे और
- उपर्युक्त विश्लेषण के माध्यम से कहानी के महत्व की पहचान कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम में आप साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन करेंगे। प्रस्तुत इकाई में प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' दी जा रही है। इस कहानी की गणना प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियों में की जाती है।

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी के पास लमही गाँव में सन् 1880 में हुआ था। उन्होंने बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त की। आरंभ में उन्होंने उर्दू में लेखन किया, बाद में वे हिंदी में भी लिखने लगे। लेखन के अतिरिक्त, प्रेमचंद शिक्षा विभाग में निरीक्षक रहे और 'हंस'

पत्रिका का संपादन किया। उनका देहावसान 1936 में हुआ। हिंदी कहानी परंपरा में प्रेमचंद का युगांतरकारी महत्व है। उन्होंने हिंदी कहानी को नया मोड़ दिया था। उन्होंने कहानी को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा और उसे सोद्देश्यता प्रदान की। उन्होंने अपनी कहानियों में उत्पीड़ित और शोषित जनता के दुःख-दर्द को वाणी दी, उनकी संवेदना और संघर्ष को नया अर्थ दिया। आरंभ में उन पर आदर्शवाद का प्रभाव था, लेकिन धीरे-धीरे उनका आदर्शवाद से मोहभंग होने लगा और वे शोषक वर्गों की अमानवीयता के कटु आलोचक बन गये। प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में जीवन के प्रत्येक पक्ष पर लिखा लेकिन किसानों और महिलाओं के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी। 'मानसरोवर' के आठ भागों में उनकी सभी प्राप्त कहानियाँ संकलित हैं। उनकी कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ हैं: 'कफन', 'पूस की रात', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'ठाकुर का कुआँ', 'सद्गति' आदि। उनके प्रख्यात उपन्यासों में 'गोदान', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'प्रेमाश्रम', 'निर्मला', 'सेवासदन' की चर्चा की जाती है। 'गोदान' को किसान-जीवन का महाकाव्य कहा गया है।

'पूस की रात' कहानी का कथ्य किसान-जीवन से संबंधित है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि किस तरह कठोर परिश्रम के बावजूद किसान हमेशा अभावों से घिरा रहता है और कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता। लगातार शोषण से उत्पीड़ित किसान की आस्था किसानी से डगमगा जाती है। कहानी के इसी कथ्य का विश्लेषण इस इकाई में विस्तार से किया गया है। इकाई में दिये गये बोध प्रश्न और अभ्यास से आप यह जान सकेंगे कि आपने कहानी को कितना समझा है।

1.2 कहानी : पूस की रात

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा – सहना आया है। लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली – तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना हार में रात को वह किसी तरह सो नहीं सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी, यह सोचता हुआ वह अपना भारी भरकम डील लिये हुए (जो उसके नाम को झूठा सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला – ला दे दे, गला तो छूटे। कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गयी और आँखें तरेरती हुई बोली – कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूँ तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात में दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये। मैं रुपये न दूँगी – न दूँगी।

हल्कू उदास होकर बोला – तो क्या गाली खाऊँ?

मुन्नी ने तड़पकर कहा – ‘गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?’

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गईं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भाँति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये। फिर बोली ‘तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।’

हल्कू ने रुपये लिये और इस तरह बाहर चला, मानो अपना हृदय निकाल कर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काटकर तीन रुपये कम्बल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अँधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गरदन में चिपकाते हुए कहा – क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आये थे। अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ। जानते थे, मैं यहाँ हलुवा-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आये। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलायी और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान-बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, ‘स्वामी को मेरी कूँ-कूँ से नींद नहीं आ रही है।’

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा – ‘कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड़ पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिये आ रही है। उठूँ फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे। आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक-एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाय तो गरमी से घबड़ाकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्मल। मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाय। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!’

हल्कू उठा गड़ढे में से जरा सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, हाँ जरा, मन बदल जाता है।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।

हल्कू – आज और जाड़ा खा ले कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूंगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिये और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी। चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और

निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया, उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसे दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद में चिमटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी के बाहर आकर भूँकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

बोध प्रश्न

आपने कहानी का उपर्युक्त अंश ध्यान से पढ़ा होगा। अब आप निम्नलिखित प्रश्नों का सही उत्तर कोष्ठक में उपसंख्या लिखकर दीजिए और अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

- 1) हल्कू की पत्नी मुन्नी ने कर्ज चुकाने का विरोध क्यों किया?
 - क) हल्कू को कंबल की जरूरत थी।
 - ख) उनके पास पैसे नहीं थे।
 - ग) उन्होंने पहले ही कर्ज चुका दिया था।
 - घ) पत्नी ने कर्ज चुकाने का विरोध नहीं किया। ()
- 2) 'न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती।' यह वाक्य किसने किससे कहा?
 - क) हल्कू ने सहना से
 - ख) मुन्नी ने सहना से
 - ग) हल्कू ने मुन्नी से
 - घ) मुन्नी ने हल्कू से ()
- 3) 'मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!' इस वाक्य का तात्पर्य क्या है?
 - क) मजदूरी करने में मजा नहीं है।
 - ख) एक की मेहनत का दूसरे द्वारा लाभ उठाया जाना।
 - ग) किसानों की मेहनत से सरकार मजा लूटती है।
 - घ) मजदूरी करने वाले मजे नहीं लूटते। ()

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जायेंगे तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेतों से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे तो समझे, कोई भूत है। कौन जाने कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिये और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिये बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा, पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा — अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो, बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टाँटे हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएँगे। अभी तो रात बहुत है।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूंदें टपटप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेंहदी के फूलों की खुशबू लिये हुए आया।

हल्कू ने कहा — कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी कुछ सुगंध आ रही है? जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपरवाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों। अंधकार के उस आनंद सागर से यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली, दोनों पाँव फैला दिये, मानो ठंड को ललकार रहा हो, 'तेरे जी में जो आए सो कर।' ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा — क्यों जबरा, अब ठंड नहीं लग रही है?

जबरा ने कूँ-कूँ करके मानो कहा — अब क्या ठंड लगती ही रहेगी?

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जबरा ने पूँछ हिलायी।

‘अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बच्चू, तो मैं दवा न करूँगा।’

जबरा ने उस अग्नि-राशि की ओर कातर नेत्रों से देखा!

‘मुन्नी से कल न कह देना, नहीं लड़ाई करेगी।’

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ निकल गया! पैरों में जरा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा — चलो-चलो, इसकी सही नहीं! ऊपर से कूदकर आओ। वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया!

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अँधेरा छाया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बंद कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था। जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर गया। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुंड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थीं फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज चर-चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा — नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!

उसने जोर से आवाज लगायी — जबरा, जबरा।

जबरा भूँकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ बैठा था। इस जाड़े-पाले में खेतों में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगायी — लिहो! लिहो! लिहो!

जबरा फिर भूँक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू । गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया।

सबरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी – क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा – क्या तू खेत से होकर आ रही है?

‘मुन्नी बोली – हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मँड़ैया डालने से क्या हुआ?

हल्कू ने बहाना किया – मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ, ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ!

दोनों फिर खेत के डाँड़ पर आये। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मँड़ैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हो।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा – अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा – रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।

शब्दावली—चौपट हो गया : नष्ट हो गया, मँड़ैया : झोपड़ी, डाँड़ : खेत की सीमा, किनारा, मालगुजारी : जमीन पर कर

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर कोष्ठक में उपसंख्या लिखकर दीजिए और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

4) हल्कू ने खेत पर ठंड से बचने के लिए क्या किया?

क) उसने कंबल ओढ़ लिया।

ख) वह घर चला गया।

ग) उसने अलाव जलाया।

घ) वही सदी में ठिठुरता रहा।

()

5) ‘जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बंद कर लेती थी।’ इस वाक्य में किसके जगने की ओर संकेत किया गया है?

क) मुन्नी

ख) ठंड

ग) नींद

घ) आग

()

6) हल्कू के खेत की खड़ी फसल को किसने नष्ट किया?

क) आग ने

ख) कुत्ते ने

ग) नीलगायों ने

घ) बाढ़ ने

()

1.3 कहानी का सार

आपने कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा। आप समझ गये होंगे कि प्रेमचंद ने कहानी के माध्यम से क्या कहना चाहा है। कहानी पर विस्तृत विचार करने से पहले आइए, हम कथा का सार जान लें।

‘पूस की रात’ कहानी ग्रामीण जीवन से संबंधित है। इस कहानी का नायक हल्कू मामूली किसान है। उसके पास थोड़ी-सी जमीन है, जिस पर खेती करके वह गुजारा करता है लेकिन खेती से जो आय होती है, वह ऋण चुकाने में निकल जाती है। सर्दियों में कंबल खरीदने के लिए उसने मजूरी करके बड़ी मुश्किल से तीन रुपये इकट्ठे किये हैं। लेकिन वह तीन रुपये भी महाजन ले जाता है। उसकी पत्नी मुन्नी इसका बहुत विरोध करती है, किंतु वह भी अंत में लाचार हो जाती है।

हल्कू अपनी फसल की देखभाल के लिए खेत पर जाता है, उसके साथ उसका पालतू कुत्ता जबरा है। वही अंधकार और अकेलेपन में उसका साथी है। पौष का महीना है। ठंडी हवा बह रही है। हल्कू के पास चादर के अलावा ओढ़ने को कुछ नहीं है। वह कुत्ते के साथ मन बहलाने की कोशिश करता है, किंतु ठंड से मुक्ति नहीं मिलती। तब वह पास के आम के बगीचे से पत्तियाँ इकट्ठी कर अलाव जलाता है। अलाव की आग से उसका शरीर गरमा जाता है, और उसे राहत मिलती है। आग बुझ जाने पर भी शरीर की गरमाहट से वह चादर ओढ़े बैठा रहता है।

उधर खेत में नीलगायें घुस जाती हैं। जबरा उनकी आहट से सावधान हो जाता है। वह उन पर भूँकता है। हल्कू को भी लगता है कि खेत में नीलगायें घुस आई हैं लेकिन वह बैठा रहता है। नीलगायें खेत को चरने लगती हैं, तब भी हल्कू नहीं उठता। एक बार उठता भी है तो ठंड के झोंके से पुनः बैठ जाता है और अंत में चादर तानकर सो जाता है।

सुबह उसकी पत्नी उसे जगाती है और बताती है कि सारी फसल नष्ट हो गयी। वह चिंतित होकर यह भी कहती है कि ‘अब मजदूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।’ इस पर हल्कू प्रसन्न होकर कहता है कि रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा!’ इसी के साथ कहानी समाप्त हो जाती है।

1.4 संदर्भ सहित व्याख्या

यहाँ हम कहानी के कुछ महत्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं, इससे आपको कहानी समझने में और मदद मिलेगी।

जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता है। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

संदर्भ: यह उद्धरण प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' से लिया गया है। इस कहानी में हल्कू (किसान) अपने खेत की रखवाली कर रहा है और उसके साथ उसका कुत्ता जबरा है। हल्कू टंड से बचने के लिए जबरे को अपनी गोद में चिपटा लेता है। कुत्ते में से दुर्गंध आ रही है।

व्याख्या: जबरा को अपनी देह से चिपटाए हल्कू को सुख का अनुभव हो रहा था। यह सुख वस्तुतः उस अकेलेपन, अंधकार और टंड की रात में जबरा के साथ से हल्कू के मन में पैदा हुआ था। हल्कू में ऊँच-नीच का ही नहीं मनुष्य और पशु का भी भेद मिट गया था। वह कुत्ते को उतना ही आत्मीय समझ रहा था, जितना वह अपने किसी रिश्तेदार और मित्र को समझता। हल्कू गरीब था, हाड़तोड़ मेहनत के बावजूद, उसकी जिंदगी अभावों से ग्रस्त थी, लेकिन गरीबी ने उसकी आत्मा की पवित्रता को कुचला नहीं था। इसीलिए वह एक जानवर के साथ भी बराबरी और आत्मीयता का व्यवहार कर सका था, उसे अपना मित्र बना सका था। जबरे के साथ मित्रता ने उसके हृदय को और उदार बना दिया था, उसकी आत्मा में जिन भावों का संचार हो रहा था, उसने उसके व्यक्तित्व को आलोकित कर दिया था। जबरा के प्रति हल्कू की इस भावना का असर जबरा पर भी पड़ा था, और वह भी हल्कू के प्रति अधिक वफादार हो गया था, जो कहानी के आगे के घटना विकास में व्यक्त होता है।

विशेष:

- 1) हल्कू गरीबी और ऋण से पूरी तरह दबा हुआ है। अपने खेत की रखवाली करते हुए अपने पालतू कुत्ते के साथ उसका व्यवहार किसान के हृदय की उच्चता और उदारता को उजागर करता है।
- 2) हल्कू और जबरा के बीच के संबंध को प्रेमचंद ने अत्यंत भावप्रवण रूप में व्यक्त किया है, जो उनके भाषिक-कौशल को भी बताता है। इसके लिए प्रेमचंद ने प्रसाद-गुण से युक्त भाषा का प्रयोग किया है अर्थात् भाषा भावों को व्यक्त करने में पूरी तरह सक्षम है।

उद्धरण: 2

मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

संदर्भ: यह उक्ति प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' से ली गयी है। कंबल के लिए बचाए गए तीन रुपये सहना (महाजन) को चुकाने के बाद पूस की ठंडी रात में, केवल चादर के सहारे हल्कू को खेत की रखवाली करनी है। खेत पर बैठे-बैठे हल्कू के मन में कई विचार उठते हैं।

व्याख्या: यह छोटी-सी उक्ति किसान के जीवन की विडंबना को पूरी तीव्रता से व्यक्त कर देती है। किसान और मजदूर रात-दिन मेहनत करते हैं। उन्हीं की मेहनत से

समाज की जरूरतें पूरी होती हैं। लेकिन अपनी मेहनत का वह लाभ नहीं उठा पाता। जो कुछ भी मेहनत—मजूरी से हासिल करता है, वह कर्ज चुकाने में निकल जाता है। जिनके पास रुपया है और जो गरीबों को ब्याज पर पैसे देते हैं, वे बिना कोई मेहनत किये ब्याज के रूप में गरीबों की मेहनत की कमाई लूटते रहते हैं। ब्याज बढ़ता रहता है और किसान कभी कर्ज नहीं चुका पाता। इस तरह वह गरीबी और अभावों में ही फँसा रहता है जबकि उनकी मेहनत की कमाई को लूटने वाले, जो किसी तरह की मेहनत भी नहीं करते, मेहनत करने वालों से कहीं ज्यादा आराम से रहते हैं।

विशेष:

- 1) यह छोटी—सी उक्ति हमारे समाज के मुख्य अंतर्विरोधों को बहुत ही तीखे रूप में व्यक्त कर देती है।
- 2) प्रेमचंद ने इतनी महत्वपूर्ण बात को बहुत ही सहज रूप में प्रस्तुत कर दिया है।

अभ्यास

- 1) नीचे दिये उद्धरण की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर—मर काम करो उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये।

संदर्भ:

.....

.....

.....

.....

.....

व्याख्या :

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 कथावस्तु

कहानी में कथावस्तु का निर्माण घटनाओं तथा पात्रों के पारस्परिक संयोग से होता है। कुछ कथानक ऐसे होते हैं जिनकी बुनावट में परिवेश की भी बहुत बड़ी हिस्सेदारी होती है। कथ्य के अनुसार ही कथावस्तु का स्वरूप बनता है, उसी के अनुसार कभी घटनाएँ प्रधान हो जाती हैं, कभी चरित्र, कभी परिवेश या वातावरण। इस कहानी में घटनाएँ बहुत अधिक नहीं हैं, न ही परिवेश का विस्तृत चित्रण किया गया है। पात्र भी बहुत कम हैं। इस कहानी की विशेषता यह है कि इसमें घटना विकास, पात्रों का चरित्र और परिवेश तीनों अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

कहानी का आरंभ: 'पूस की रात' प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है। इस कहानी में कथा का अधिक विस्तार नहीं है। न घटनाक्रम तेजी से बदलते हैं। कथा का आरंभ हल्कू के घर से होता है। कहानीकार हल्कू के घर का उतना ही वर्णन करता है, जितने का उस कहानी से संबंध है। हल्कू ने कर्ज ले रखा है, सहना, जिससे कर्ज लिया है वह अपना रुपया माँगने हल्कू के यहाँ आता है। हल्कू अपनी पत्नी मुन्नी से रुपये माँगता है। मुन्नी के पास तीन रुपये हैं जो हल्कू ने मजूरी में से बड़ी मुश्किल से बचाए हैं ताकि एक कंबल खरीदा जा सके। बिना कंबल के जाड़ों की रात खेतों पर गुजारना कठिन होगा, इसीलिए मुन्नी रुपये देने का विरोध करती है। इस समय पति-पत्नी में जो बातचीत होती है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुन्नी कहती है 'न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती।' मुन्नी के इस कथन में एक बड़ी सच्चाई को प्रेमचंद ने उजागर किया है। किसान मजबूर होकर महाजन से ऋण लेता है, किंतु उसके बाद वह उससे मुक्त नहीं हो पाता। ब्याज-दर के जाल में वह ऐसा उलझ जाता है कि उसकी सारी मेहनत-मजूरी उसे चुकाने में ही चुक जाती है।

मुन्नी किसानों के जीवन की इस व्यवस्था को और उजागर करते हुए कहती है, 'मर मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है।' स्पष्ट ही ऋण चुकाते रहने की विडंबना से परेशान किसान के मन में यह सवाल जरूर पैदा होता है कि क्या उसका जन्म केवल ऋण चुकाने के लिए ही हुआ है क्या उसकी मेहनत इसी तरह दूसरे हड़पते रहेंगे। और अपना पेट भरने के लिए उसे मजूरी करनी पड़ेगी। अगर अपना पेट भरने के लिए मजूरी ही करनी है तो फिर खेती से चिपके रहने का क्या मतलब इसी भावना से प्रेरित होकर मुन्नी हल्कू से कहती है, 'तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी

खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।' बहरहाल, हल्कू वह तीन रुपये सहना को दे देता है। यह कहानी का पहला भाग है।

इस भाग को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि हल्कू जैसे गरीब किसान के लिए खेती कितनी मुश्किल होती जा रही थी। यहाँ तक कि वे यह भी सोचने लगते हैं कि क्यों न किसानी छोड़ कर मजूरी की जाए? कहानी का शेष अंश किसान की इसी मनोदशा का अत्यंत मार्मिक चित्रण करता है।

कहानी का विकास: कहानी का दूसरा भाग हल्कू के अपने खेत पर आरंभ होता है। पूस की अंधेरी रात है। हल्कू के साथ सिर्फ उसका पालतू कुत्ता जबरा है। ठंडी हवा चल रही है। हल्कू के पास सर्दी से बचने के लिए एक चादर भर है, लेकिन वह चादर उस ठंड से उसकी रक्षा नहीं कर पाती। हल्कू की मनोभावनाएँ प्रेमचंद ने यहाँ जबरा के साथ हल्कू की बातचीत से व्यक्त की है। यद्यपि कुत्ता होने के कारण जबरा हल्कू की किसी बात को न समझ सकता है, न जवाब दे सकता है, लेकिन जबरा के प्रति हल्कू की आत्मीयता उसकी हृदयगत ऊँचाइयों को व्यक्त करती है।

खेत में हल्कू की सबसे बड़ी चिंता ठंड से बचाव की है। वह जबरा को संबोधित कर कहता है कि इतनी सर्दी में तुम मेरे साथ क्यों आए। फिर इसी तरह की बात करते हुए वह अपनी स्थिति की तुलना उन 'भागवान' लोगों के साथ करने लगता है 'जिनके पास जाड़ा जाए तो गरमी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कंबल। मजाल है, जाड़े की गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें।' यहाँ हल्कू की बातों के माध्यम से प्रेमचंद समाज के एक बहुत बड़े अंतर्विरोध को उजागर करते हैं। वह एक तरह से यह प्रश्न उठाते हैं कि ऐसा क्यों है कि मेहनत करने वाला किसान तो भूखा सोता है और उसकी मेहनत का फल भोगने वाले मजे करते हैं? जाहिर है, हल्कू के पास इस सवाल का जवाब नहीं है। वह तो इसे 'तकदीर की खूबी' ही मान रहा है। हल्कू की इस मानसिकता की तुलना अगर कहानी के आरंभ में मुन्नी की बातों से करें तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि दोनों एक-सी ही बात सोच रहे हैं। अगर हमारी मेहनत दूसरों के पास ही जानी है तो खेती से जुड़े रहने का क्या लाभ?

कहानी का आगे का हिस्सा हल्कू की जाड़े से बचाव की कोशिश के रूप में सामने आता है। पहले वह चिलम पीता है, फिर चादर ओढ़कर सोता है, तब भी सर्दी से बचाव नहीं होता, तो वह कुत्ते को अपनी गोद में सुला देता है। कुत्ता हल्कू की इस आत्मीयता को महसूस भी करता है। इसीलिए जब किसी जानवर की आहट आती है तो वह चौकन्ना होकर भौंकने लगता है।

आखिर जब सर्दी से किसी तरीके से बचाव नहीं होता तो हल्कू अलाव जलाता है। अलाव से उसको काफी राहत मिलती है। उसका शरीर गरमा जाता है। एक नया उत्साह उसके मन में पैदा होता है और वह जबरा के साथ अलाव पर से कूदने की प्रतियोगिता भी करने लगता है।

धीरे-धीरे अलाव भी बुझ जाता है, लेकिन शरीर की गरमाहट हल्कू को काफी अच्छी लगती है, वह गीत गुनगुनाने लगता है। लेकिन बढ़ती सर्दी उसके अंदर आलस्य बढ़ाने लगती है। यहाँ कहानी में एक महत्वपूर्ण मोड़ आता है।

कहानी की परिणति: हल्कू के खेत में नीलगायों का झुंड घुस आता है, जिनकी आहट पर जबरा भौंकता हुआ खेत की ओर भागता है। हल्कू को भी लगता है कि जानवरों का झुंड खेत में घुस आया है। फिर उनके कूदने-दौड़ने की आवाजें भी आने लगती हैं, और फिर खेत के चरने की भी। लेकिन हल्कू नहीं उठता। वह अपने मन को झूठा दिलासा देते हुए सोचता है कि 'जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता।' जबरा लगातार भौंकता रहता है, लेकिन हल्कू को आलस्य घेरे रहता है। एक बार वह उठता भी है, दो-तीन कदम चलता है, लेकिन ठंड के तेज झोंके के कारण वह फिर अलाव के पास आके बैठ जाता है। आखिरकार, नीलगायें पूरे खेत को नष्ट कर जाती हैं।

यहाँ प्रश्न उठता है कि हल्कू अपनी फसल को बचाने की कोशिश क्यों नहीं करता? क्या वह आलसी है? क्या वह ठंड के मारे इतना परेशान था कि अपनी फसल का नष्ट होना भी वह सर्दी के मुकाबले बर्दाश्त कर सकता था। स्पष्ट ही कारण ये नहीं हैं? कारण जैसा कि कहानी से साफ है हल्कू की वह मानसिकता है, जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं। आखिर वह अपनी फसल की रक्षा किसके लिए करे? क्या सिर्फ महाजनों को लुटाने के लिए? अगर उसकी मेहनत सूदखोरों और जमींदारों के पास ही जानी है तो फिर नीलगायें चर लें तो क्या? वस्तुतः लगातार शोषण ने हल्कू को अपनी ही मेहनत से उपजायी फसल से उदासीन बना दिया है, इसीलिए उसकी मुख्य चिंता सर्दी से बचने की हो जाती है, फसल को बचाने की नहीं। यही कारण है कि वह अपनी पत्नी के यह कहने पर कि अब मजूरी करके मालगुजारी चुकानी पड़ेगी तो वह कहता है 'रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।'

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

- 7) मुन्नी की वह कौन-सी बात है जो कहानी की परिणति में व्यक्त हुई है।
 - क) "महाजन गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?"
 - ख) "बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है।"
 - ग) "तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी तो मिलेगी।"
 - घ) "न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती।"
- 8) हल्कू खेत को बचाने के लिए क्यों नहीं उठा?
 - क) उसे ठंड लग रही थी।
 - ख) लगातार शोषण ने उसे अपनी उपज के प्रति उदासीन बना दिया था।
 - ग) उसे जबरा पर विश्वास था कि उसके रहते जानवर नहीं घुस सकते।
 - घ) उसके पेट में बड़े जोरों से दर्द उठ रहा था।
- 9) हल्कू को खेती छोड़ने की सलाह देते हुए मुन्नी कौन से विचार प्रस्तुत करती है? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

- 10) खेत नष्ट हो जाने पर भी हल्कू "प्रसन्नता" व्यक्त करता है? आप उन दो कारणों को बताइए जो हल्कू की "प्रसन्नता" में व्यक्त हो रहे हैं?

1.6 चरित्र चित्रण

इस कहानी में कुल चार पात्र आते हैं। हल्कू किसान, उसकी पत्नी मुन्नी, सहना जो कर्ज वसूलने आता है और हल्कू का पालतू कुत्ता जबरा। सहना का जिक्र सिर्फ कहानी के आरंभ में है, उसका कहानी में प्रत्यक्ष प्रवेश नहीं होता। मुन्नी कहानी के पहले और अंतिम भाग में आती है। पहले भाग में वह हल्कू को तीन रुपये सहना को देने से रोकती है। उस समय उसके माध्यम से प्रेमचंद कहानी की कथावस्तु पर प्रकाश डालने वाली कई बातें कहलाते हैं। उन बातों से और बात करने के अंदाज से उसके दृढ़ व्यक्तित्व का पता चलता है। इसके बाद अंतिम भाग में वह पुनः आती है, जब खेत नष्ट हो जाने के बाद वह सवेरे अपने पति के पास पहुँचती है और उसे जगाती है। यहाँ उसका दूसरा रूप सामने आता है। खेत नष्ट हो जाने से यहां वह चिंतित नजर आती है। लेकिन प्रेमचंद ने इस चरित्र का अधिक विस्तार नहीं किया है। जबरा खेत पर हल्कू के साथ रहता है, उसकी स्वामिभक्ति, खेत नष्ट होते देखकर अपने स्वामी को सावधान करने की कोशिश, भौंक-भौंक कर जानवरों को भगाने की कोशिश और अंत में असफल हो जाने पर पस्त होकर लेट जाना, उसको काफी जीवंत पात्र बना देते हैं, लेकिन कहानी में विस्तार से हल्कू के चरित्र की ही अभिव्यक्ति हुई है।

हल्कू : हल्कू 'पूँस की रात' का केंद्रीय चरित्र है। वह गरीब किसान है। उसके पास कुछ खेती लायक जमीन है। जमीन कितनी है, इसका विवरण प्रेमचंद ने नहीं दिया है, लेकिन हल्कू की आर्थिक स्थिति से अनुमान लगा सकते हैं वह बहुत मामूली हैसियत का किसान है और खेती योग्य जमीन भी बहुत कम होगी। जमीन पर जो उपज होती है, वह घर-परिवार के लिए पर्याप्त नहीं है, इसलिए उसे कर्ज लेना पड़ता है। उसकी सारी उपज कर्ज चुकाने में चली जाती है, फिर भी वह ऋण से मुक्त नहीं हो पाता। इसलिए उसे मजदूरी करनी पड़ती है, यद्यपि "मजूरी" से बचाए पैसे भी उसे महाजन को देने पड़ते हैं।

आर्थिक दीनता ने हल्कू के मन को दीन नहीं बनाया है लगातार शोषण ने उसे धीरे-धीरे किसानों के प्रति उदासीन अवस्था बना दिया है। हल्कू के स्वभाव का परिचय हमें कहानी की शुरुआत से ही लग जाता है। जब सहना कर्ज माँगने आता है, तब उसकी पत्नी "मजूरी" से बचाए तीन रुपये देने को तैयार नहीं होती। जबकि हल्कू का दृष्टिकोण ज्यादा व्यावहारिक है। वह जानता है कि इससे बचने का कोई उपाय नहीं है। अगर अभी वह रुपया नहीं देगा तो उसे गालियाँ और घुड़कियाँ सहनी पड़ेंगी। जब वह यही बात मुन्नी को कहता है तो मुन्नी कहती है "गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है" मुन्नी सूदखोर महाजनों और जमींदारों की ताकत को भले न जानती हो, हल्कू जानता है। वह जानता है कि इनसे बचने का कोई रास्ता नहीं है।

हल्कू एक समझदार किसान है। वह समाज के अंतर्विरोध को बखूबी समझता है। वह जानता है कि समाज में ऐसे लोग भी हैं जिनके पास हर तरह की सुख-सुविधाओं के साधन मौजूद हैं। लेकिन ये साधन उन लोगों के पास हैं जो स्वयं मेहनत नहीं करते, जो किसानों की मेहनत का लाभ उठाते हैं। लेकिन हल्कू इसके सही कारण को पहचानने में असमर्थ है। वह उसे 'तकदीर की खूबी' समझता है। यानी कि जो दूसरों की मेहनत पर मजे कर रहे हैं, वे भाग्यशाली हैं और हम जो मेहनत करके भी भूखे मर रहे हैं, हमारा भाग्य ही खराब है शोषण को भाग्य का खेल समझने के कारण हल्कू के पास शोषण से बचने का कोई अन्य रास्ता नहीं है। इसीलिए वह सोचता है कि अगर खेती में भी शोषण होना है तो ऐसी खेती से चिपके रहने का क्या लाभ? दूसरे, वह यह भी सोचता है कि जब लोग मेहनत न करके भी सुखी हैं, तो फिर मेहनत करते रहने का क्या मतलब? इस तरह लगातार शोषण उसकी चेतना को कृषि और श्रम दोनों से उदासीन बना देता है। हल्कू की यही मानसिकता खेत पर उसके सारे व्यवहार में व्यक्त होती है।

खेत पर वह अपने उपज की देखभाल करने के लिए आया है। उसके साथ उसका कुत्ता है, जिसके साथ उसका व्यवहार उसके हृदय की मानवीयता और पवित्रता को व्यक्त करता है। जैसा कि प्रेमचंद ने स्वयं कहानी में लिखा है, 'गरीबी ने हल्कू की आत्मा को आहत नहीं किया है'। इसलिए वह अपने को सर्दी से बचाने के लिए जितना चिंतित है, उतनी ही चिंता जबरा को लेकर भी है। हल्कू के खेत में जब नीलगायें आ जाती हैं, तब हल्कू उठकर नहीं जाता। पहले वह सोचता है कि जबरा के रहते कोई जानवर खेत में जा ही नहीं सकता। फिर वह उठता भी है तो दो-तीन कदम चलकर ठंड के बहाने से पुनः बैठ जाता है। यह जानते हुए कि नीलगायें खेत चर रही हैं, वह चादर ओढ़कर सो जाता है। उसका यह व्यवहार निश्चय ही उसके पहले के व्यवहार से भिन्न है, लेकिन अगर हम कहानी के पहले भाग पर गौर करें तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि इस व्यवहार का क्या कारण है? वस्तुतः हल्कू लगातार शोषण से परेशान होकर जिस मानसिकता से गुजर रहा है, उसी का नतीजा है कि वह अपनी ही मेहनत से उपजाई फसल को बचाने की कोशिश नहीं करता। निश्चय ही हल्कू स्वयं इस व्यवहार के लिए उत्तरदायी नहीं है। परिस्थितियों ने उसे ऐसी स्थिति में पहुँचा दिया है। वे परिस्थितियाँ हैं, किसान का लगातार शोषण। वह अशिक्षित है, धार्मिक आतंक और अंधविश्वास के कारण भाग्यवादी है, गरीब है, इसलिए वह कथित उच्चवर्गीय महाजनों और जमींदारों के चंगुल में फँसा हुआ है। शोषण के चक्र से वह कैसे मुक्त हो, यह नहीं जानता, इसलिए वह किसानों करने की लाचारी से ही मुक्त होने की सोचता है। स्पष्ट ही उसकी मानसिकता किसान के भयावह शोषण को ही उजागर करती है, और इस अर्थ में हल्कू की यह मानसिकता केवल हल्कू की

मानसिकता नहीं रहती, गरीब मेहनतकश की मानसिकता बन जाती है। हल्कू का चरित्र इसी अर्थ में एक वर्गीय चरित्र बन जाता है।

अभ्यास

2) नीचे दिये गये उदाहरणों के आधार पर हल्कू के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

- क) मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा, बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सर से टल जाएगी।

- ख) और एक-एक भागवान ऐसे पड़े हैं जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घबड़ा कर भागे। मोटे-मोटे गद्दे-लिहाफ, कम्मल। मजाल है जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें।

- ग) आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

- घ) हल्कू ने बहाना किया — मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है! पेट में ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ।

कहानी की रचना में देश-काल का बड़ा महत्व होता है। देश-काल से तात्पर्य है वह परिवेश जिसमें कहानी का पूरा घटनाचक्र घटित हुआ है। कहानी का यह कथ्य जिस परिवेश में घटित होता है, वह भी कथ्य को निर्धारित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूसरे कहानी का कथ्य जिस देश-काल से संबंधित होता है, उसके द्वारा हम उस युग की स्थितियों की अधिक यथार्थपरक पहचान भी करते हैं।

‘पूस की रात’ की रचना प्रेमचंद ने 1930 में की थी। उस समय भारत में अंग्रेजों का राज था। अंग्रेजी राज में भारत के किसानों की दशा अत्यंत दयनीय थी। जमींदारी प्रथा के कारण आम किसानों का भयंकर शोषण होता था। उनकी उपज का बड़ा हिस्सा जमींदार मालगुजारी के रूप में वसूल कर लेते थे। इससे उनको अपने जीवनयापन के लिए महाजन से कर्जा लेना पड़ता था। लेकिन महाजन भी किसान की मजबूरी और उसकी अशिक्षा तथा पिछड़ेपन का लाभ उठाते थे। परिणाम यह होता था कि एक बार ऋण के चक्र में फँसने के बाद किसान की आसानी से मुक्ति नहीं होती थी। प्रेमचंद ने अपनी कई कहानियों में ग्रामीण जीवन के इसी यथार्थ को चित्रित किया है।

इस कहानी में ग्राम्य जीवन का विस्तृत चित्रण नहीं है, लेकिन ग्रामीण जीवन की सारी विशेषताएँ इसमें अत्यंत जीवंत रूप में चित्रित हुई हैं। प्रेमचंद ग्राम्य वातावरण की सृष्टि करने के लिए सबसे पहले भाषा के स्तर पर परिवर्तन करते थे। ग्राम्य वातावरण से जुड़ी हुई कहानियों में तद्भव और देशज शब्दों का अधिक प्रयोग होता है जैसे – कम्मल, डील, पूस, उपज, आले, धौंस आदि। प्रेमचंद ग्रामीण वातावरण को यथार्थपरक बनाने के लिए मुहावरों का भी प्रयोग करते हैं। जैसे – बाज आना, ठंडे हो जाना, चौपट होना आदि। प्रेमचंद को ग्राम्य जीवन की सूक्ष्म पहचान थी। इस कहानी में उन्होंने अंधेरी रात में खेत पर हल्कू और जबरा के क्रियाकलापों का जो चित्रण किया है, उसमें उस वातावरण को प्रेमचंद ने अत्यंत सजीव बना दिया। पूस की अंधेरी रात में खेत का दृश्य देखिए:

“पूस की अंधेरी रात। आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा काँप रहा था।”

इस दृश्य में आप पायेंगे कि प्रेमचंद ने खेत के वातावरण के सारे पक्षों को समेट लिया है। पूस की अंधेरी रात है। पौष के महीने में पड़ने वाली ठंड को व्यक्त करने के लिए वह अगला वाक्य लिखते हैं “आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे।” यह वाक्य ठंड की तल्खी को व्यक्त करता है और ठंड का कहानी के विकास से गहरा संबंध है। इससे अगले वाक्य में उस स्थान का वर्णन है जहाँ उसे जाड़े की रात गुजारनी है। लेकिन यहाँ भी “पुरानी गाढ़े की चादर” का जिक्र महत्वपूर्ण है जिसे लपेटे वह बांस के खटोले पर बैठा काँप रहा है। इसी “चादर” की जगह वह कंबल खरीदना चाहता था। इसीलिए “पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े” काँपना हल्कू की आगे की क्रियाओं का आधार बन जाता है। प्रेमचंद केवल बाह्य परिवेश के चित्रण में ही सफल नहीं हैं वरन् पात्रों की मनोदशा के चित्रण में भी अत्यंत कुशल हैं।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसे हृदय में कंपन होने लगा। कभी इस करवट लेटता कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

ठंड के मारे हल्कू परेशान है। चादर सर्दी रोकने में असमर्थ है। तब वह चिलम पीता है, लेकिन चिलम भी उसकी कोई सहायता नहीं करती। उसके बाद की उसकी मनःस्थिति और बाह्य परिस्थिति के द्वंद्व का उपर्युक्त पंक्तियों में चित्रण किया है। हल्कू चिलम पीकर निश्चय करता है कि अब वह लेट जाए, लेकिन सर्दी से वह काँपने लगता है। तब वह इधर-उधर करवट बदलता है लेकिन उससे भी उसे आराम नहीं मिलता। ऐसे में प्रेमचंद सर्दी की तीव्रता को व्यक्त करने के लिए एक स्थिति का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं "जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।" यहाँ पिशाच द्वारा छाती को दबाना जिस स्थिति को व्यक्त करता है उससे ठंड की तीव्रता पाठक के सामने सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

प्रेमचंद ने केवल हल्कू की क्रियाओं का ही नहीं जबरान की क्रियाओं का भी अत्यंत सजीव और यथार्थ चित्रण किया है।

सहसा जबरान ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी के बाहर आकर भूंकने लगा। हल्कू ने कई बार उसे चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

यहाँ सिर्फ कुत्ते की क्रियाओं का ही वर्णन नहीं है, वरन् उसकी हल्कू के प्रति कर्तव्य-भावना का भी चित्रण किया गया है और दोनों चीजें उपर्युक्त अंश में इतने आत्मीय रूप में व्यक्त हुई हैं कि कुत्ता, कुत्ता नहीं वरन् कहानी का जीवंत पात्र बन कर सामने आया है।

1.8 संरचना शिल्प

कहानी की रचना भाषा में होती है और भाषा का कलात्मक उपयोग कहानी के कथ्य और प्रतिपाद्य को संप्रेष्य बनाता है। इसलिए कहानी रचना के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है कि कहानी का कथ्य और प्रतिपाद्य उत्कृष्ट हो वरन् यह भी जरूरी है कि वह उत्कृष्टता कहानी में अभिव्यक्त भी हो। यह अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती है। कहानी का कथ्य अलग-अलग शैलियों को संभव बनाता है। इस प्रकार शैली और भाषा कहानी की संरचना के मुख्य अंग हैं।

शैली : 'पूस की रात' प्रेमचंद की अत्यंत प्रौढ़ रचना मानी जाती है। यह कहानी जितनी कथ्य और प्रतिपाद्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, उतनी ही भाषा और शैली की दृष्टि से भी। यह कहानी ग्राम्य जीवन पर आधारित है। लेकिन प्रेमचंद की आरंभिक कहानियों में जिस तरह का आदर्शवाद दिखाई देता था, वह इस कहानी में नहीं है। इसका प्रभाव कहानी की शैली पर भी दिखाई देता है। प्रेमचंद ने इस कहानी में अपने कथ्य को यथार्थपरक दृष्टि से प्रस्तुत किया है इसलिए उनकी शैली भी यथार्थवादी है। यथार्थवादी शैली की विशेषता यह होती है कि रचनाकार जीवन यथार्थ को उसी रूप में प्रस्तुत करता है जिस रूप में वे होती हैं, लेकिन ऐसा करते हुए भी उसकी

दृष्टि सिर्फ तथ्यों तक सीमित नहीं होती। इसके विपरीत वह जीवन की वास्तविकताओं को यथार्थ रूप में इसलिए प्रस्तुत करता है ताकि उसके बदले जाने की आवश्यकता को पाठक स्वयं महसूस करे। दूसरे, यथार्थवादी रचनाकार यथार्थ के उद्घाटन द्वारा पाठकों को, समस्या का हल नहीं देता पर उन्हें प्रेरित करता है कि वह स्वयं स्थितियों को बदलने की आवश्यकता महसूस करे और उसके लिए उचित मार्ग खोजे। इस कहानी में प्रेमचंद की दृष्टि यथार्थ के उद्घाटन पर टिकी है। वे न तो हल्कू को नायक बनाते हैं न खलनायक। वे इस समस्या का कोई हल भी प्रस्तुत नहीं करते। कहानी की रचना वे इस तरह करते हैं कि जिससे कहानी में प्रस्तुत की गई समस्या अपनी पूरी तार्किकता के साथ उभरे।

‘पूस की रात’ का अगर हम विश्लेषण करें तो इस बात को आसानी से समझ सकते हैं। कहानी का आरंभ एक छोटी-सी घटना से होता है। हल्कू के यहाँ महाजन कर्ज माँगने आया है। हल्कू तीन रुपए उसको दे देता है जो उसने केवल कंबल खरीदने के लिए जोड़े हैं। इसके बाद कहानी इस प्रसंग से कट जाती है। दूसरे भाग से कहानी में एक नया प्रसंग आरंभ होता है। पूस का महीना है। अंधेरी रात है। अपने खेत के पास बनी मंडैया में वह चादर लपेटे बैठा है और ठंड से काँप रहा है। सर्दी में ठंड से काँपना पहले प्रसंग से कहानी को जोड़ देता है जब हल्कू को मजबूरन तीन रुपये देने पड़े थे। यहाँ पहले प्रसंग में उठाया गया सवाल भी उभरता है कि ऐसी खेती से क्या लाभ, जिससे किसान की बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं होती? यानी लगातार शोषण और उससे मुक्ति की संभावना का अभाव अंततः किसान को ऐसी मानसिक स्थिति में पहुँचा सकता है जहाँ कहानी के अंत में हल्कू पहुँच जाता है। कहानी के अंत में नीलगायों द्वारा खेत नष्ट होते देखकर भी हल्कू अगर नहीं उठता तो इसका कारण केवल ठंड नहीं है। यहाँ हल्कू में अपनी उपज को बचाने की इच्छा ही खत्म हो चुकी है। इस तरह समस्या की भयावहता का चित्रण करता हुआ कहानीकार कहानी को समाप्त कर देता है। ‘पूस की रात’ की शैली की यही विशेषता है और इसी यथार्थवादी शैली ने उनकी इस रचना को श्रेष्ठ बनाया है।

भाषा : प्रेमचंद की कहानियों की भाषा बोलचाल की सहज भाषा के नजदीक है। उनके यहाँ संस्कृत, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के उन शब्दों का इस्तेमाल हुआ है जो बोलचाल की हिंदी के अंग बन चुके हैं। प्रायः वे तद्भव शब्दों का प्रयोग करते हैं। वे कहानी के परिवेश के अनुसार शब्दों का चयन करते हैं, जैसे ग्राम्य जीवन से संबंधित कहानियों में देशज शब्दों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का अधिक प्रयोग होता है। वाक्य रचना भी सहज होती है। लंबे और जटिल वाक्य बहुत कम होते हैं। प्रायः छोटे और सुलझे हुए वाक्य होते हैं ताकि पाठकों तक सहज रूप से संप्रेषित हो सकें।

‘पूस की रात’ कहानी ग्रामीण जीवन से संबंधित है। इसलिए इस कहानी में देशज और तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। जैसे; **तद्भव शब्द:** कम्मल, पूस, उपज, जनम, ऊख।

देशज : हार, डील, आले, धौंस, खटोले, पुआल, टप्पे, उपजा, अलाव, दोहर। तद्भव और देशज शब्दों के प्रयोग से कहानी के ग्रामीण वातावरण को जीवंत बनाने में काफी मदद मिलती है। लेकिन प्रेमचंद ने उर्दू और संस्कृत के शब्दों का भी प्रयोग किया है। उर्दू के प्रायः ऐसे शब्द जो हिंदी में काफी प्रचलित हैं, ही प्रयोग किए गए हैं। जैसे, खुशामद, तकदीर, मजा, अरमान, खुशबू, गिर्द, दिन, साफ, दर्द, मालगुजारी आदि। उर्दू के ये शब्द भी उन्हीं रूपों में प्रयुक्त हुए हैं, जिन रूपों में वे बोलचाल की भाषा में

प्रचलित हैं जैसे दर्द को दरद, मजदूरी को मजूरी आदि। इस कहानी में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग भी पर्याप्त हुआ है, लेकिन वे भी ज्यादातर हिंदी में प्रचलित हैं और कठिन नहीं माने जाते। जैसे, हृदय, पवित्र, आत्मा, आत्मीयता, पिशाच, दीनता, मैत्री आदि। श्वान, अकर्मण्यता अणु जैसे अपेक्षाकृत कम प्रचलित तत्सम शब्द भी हैं, लेकिन वे कहानी में खटकते नहीं। तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रायः ऐसी ही जगह हुआ है, जहाँ कथाकार ने किसी भावप्रवण स्थिति का चित्रण किया है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित अंश को देखिए:

“जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था जिसने आज उसे इस दशा में पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी-मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।”

उपर्युक्त वाक्यों में आप देखेंगे कि एक भावात्मक स्थिति का चित्रण किया गया है। इन तत्सम शब्दों में जो कोमलता है वह इस आत्मीय पूर्ण स्थिति को जीवंत बनाने में सहायक है। लेकिन प्रेमचंद ने यह ध्यान रखा है कि उन्हीं तत्सम शब्दों का प्रयोग करें जो हिंदी भाषा की स्वाभाविकता के अनुकूल हों। प्रेमचंद की रचनाओं में शब्दों का प्रयोग अत्यंत सतर्कता के साथ होता है। कोई भी शब्द फालतू नहीं होता तथा उनमें अर्थ की अधिकतम संभावनाएँ व्यक्त होती हैं। जैसे निम्नलिखित वाक्यों को देखिए:

मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें।

उपर्युक्त वाक्य में “मजूरी” और “मजा” शब्द शोषण की पूरी प्रक्रिया को व्यक्त करने में समर्थ हैं। विशेष बात यह है कि इस तरह के गहरे अर्थ वाले वाक्यों में भी ऐसी सहजता होती है कि उसे कोई भी आसानी से समझ सके। प्रेमचंद की भाषा जटिल भावना, विचारों या स्थितियों को व्यक्त करने में पूरी तरह समर्थ है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखें:

हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भाँति उसे घूर रहा था।

कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट पर, जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

ऊपर के तीन उद्धरणों में मोटे अक्षरों वाले वाक्यों से पूर्व के वाक्यांशों में व्यक्त किए गए भावों की तीव्रता या अर्थवत्ता अधिक स्पष्ट रूप से और प्रभावशाली ढंग से उजागर हुई है। इससे भाषा में जीवंतता भी आती है।

संवाद : प्रेमचंद की कहानियों में संवाद की भाषा उनके कथ्य की तरह यथार्थ परक होती है। संवादों की भाषा का निर्धारण पात्रों के परिवेश और उनकी मनःस्थिति से तय होता है। इस कहानी में अधिकांश संवाद हल्कू के हैं, कुछ उसकी पत्नी मुन्नी के हल्कू के संवादों में भी स्वकथन वाले संवाद या ऐसे संवाद जो जबरा (कुत्ते) को संबोधित हैं, अधिक हैं। हल्कू और मुन्नी गरीब किसान हैं। इसीलिए उनकी भाषा भी उसी परिवेश के अनुकूल ग्राम्यता लिए हुए हैं।

हल्कू और मुन्नी की बातचीत का अंश देखिए : हल्कू ने आकर स्त्री से कहा – सहना आया है। लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे। मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिर कर बोली— तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा। माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी उससे कह दो, फसल पर दे देंगे अभी नहीं। ये कहानी के आरंभिक संवाद हैं। इनमें आप पायेंगे कि दोनों व्यक्तियों की भाषा बहुत ही सरल है इनमें एक भी कथन जटिल नहीं है। कम्मल, पूस, हार जैसे शब्द उनके ग्राम्य पृष्ठभूमि को व्यक्त करते हैं। गला तो छूटे, मुहावरा वाक्य को और अधिक स्वाभाविक बनाता है, साथ ही कहने वाले की मानसिक स्थिति का संकेत भी करता है। वाक्य बहुत छोटे-छोटे हैं, उनमें भी छोटे-छोटे उपवाक्यों का प्रयोग किया गया है।

“लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे” इस वाक्य में कहीं उलझाव नहीं है। छोटे-छोटे उपवाक्यों के कारण पूरी बात सहज ही स्पष्ट हो जाती है। प्रेमचंद ने पात्रों की मनःस्थिति का विशेष रूप से ध्यान रखा है। हार पर हल्कू के संवादों में उदारता, सरलता, समझदारी, चतुराई सभी झलकती है और भावनाओं के सूक्ष्म अंतर के अनुकूल भाषा में भी अंतर आता गया है।

इस तरह शैली, भाषा और संवाद तीनों दृष्टियों से प्रेमचंद की यह कहानी उत्कृष्ट है।

बोध प्रश्न

11) ‘पूस की रात’ कहानी में से ऐसे छह शब्द चुनिए जिनसे ग्राम्य वातावरण बनाने में मदद मिली हो।

क) ख) ग)

घ) ड.) च)

12) कहानी में मुन्नी के गुस्से को व्यक्त करने वाला संवाद लिखिए। संवाद के लिए कहानी देख सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

13) “बगीचे में खूब अंधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदे टपटप नीचे टपक रही थीं।” उपर्युक्त वाक्यों में तीन-तीन तत्सम और तद्भव शब्द चुनकर लिखिए:

तत्सम शब्द :.....

तद्भव शब्द :

अभ्यास

3) नीचे दिए गए उद्धरण की तीन भाषागत विशेषताएँ बताइए।

“थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम

होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हो। अंधकार के उस आनंद सागर से यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।”

क)

.....

.....

ख)

.....

.....

ग)

.....

.....

- 4) ‘पूस की रात’ कहानी को यथाथर्वादी शैली की कहानी कहा गया है। इस शैली की दृष्टि से इस कहानी की तीन विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.9 प्रतिपाद्य

रचना लेखक किसी उद्देश्य से प्रेरित होकर ही करता है। जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर रचनाकार रचना करता है, कहानी का वही प्रतिपाद्य कहलाता है। ‘पूस की रात’ कहानी को आपने ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा। आपने अब तक कहानी का जो विश्लेषण पढ़ा है, उससे यह भी स्पष्ट हो गया होगा कि प्रेमचंद कहानी के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं। हम उन्हीं बातों को पुनः यहाँ प्रस्तुत करेंगे। यह कहानी चौथे दशक के दौरान लिखी गई है। उस समय भारत पराधीन था और यहाँ की जनता स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रही थी। इस संघर्ष में किसान और मजदूर जनता भी शामिल थी। किसान सिर्फ देश की स्वतंत्रता के लिए ही संघर्ष नहीं कर रहे थे वरन् अपने अधिकारों के लिए भी संघर्ष कर रहे थे।

उस जमाने में जमींदारी प्रथा थी। किसानों को अपनी उपज का बड़ा भाग लगान और मालगुजारी में चुकाना पड़ता था। इस कारण उन्हें अपना जीवनयापन करने के लिए महाजनों और जमींदारों से ऋण लेना पड़ता था। चूँकि अधिकांश किसान जनता अशिक्षित थी, इसलिए जमींदार और महाजन कर्ज पर मनमाना ब्याज वसूलते थे। एक बार जब कोई किसान कर्ज के चक्कर में फँस जाता था तो फिर वह आसानी से छूट

नहीं पाता था। हल्कू की भी यही स्थिति है। प्रेमचंद ने कहानी में किसानों की इस अवस्था का चित्रण नहीं किया है, बल्कि यह यथार्थ तो कहानी की पृष्ठभूमि में मौजूद रहता है। लेकिन असली सवाल इसके बाद पैदा होता है। शोषण चक्र में फँसा हुआ किसान क्या करे? कहानी का विषय यही है। हल्कू भी शोषण के उसी चक्र में फँसा हुआ है। यहाँ तक की अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए हल्कू को मजदूरी भी करनी पड़ती है। लेकिन मजदूरी से मिले पैसे में से अगर घर-परिवार की जरूरत के लिए कुछ पैसे भी बचाता है (सिर्फ तीन रुपए) तो वह भी महाजन ले लेता है। ऐसे में किसान क्या करे। आखिर वह किसानों से क्यों चिपका रहे?

व्यक्ति उज्ज्वल भविष्य की आशा में ही कष्ट सहता है। उसे भरोसा रहता है कि आज नहीं तो कल वह जरूर इन दुखों से मुक्त होगा। हल्कू के जीवन में वह आशा नहीं रही है। वह सोचता है कि ऐसा क्यों है कि मेहनत करने वाले भूखे मरते हैं और उनकी मेहनत को छीनने वाले मौज करते हैं? उसके पास इसका बना-बनाया जवाब भी है – यह सब भाग्य का खेल है। जिस स्थिति में वह जी रहा है, उसमें वह इससे अधिक दूर तक सोच भी नहीं सकता। लेकिन भाग्य का खेल मानने से शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती है। हाँ, यह अवश्य है कि व्यक्ति नकारात्मक दिशा में सोचना शुरू कर दे, जैसा कि हल्कू सोचता है और जो मुन्नी की बातों में व्यक्त हुआ है।

हल्कू का किसानों पर से विश्वास उठ जाता है। वह अपनी ही आँखों के सामने अपने खेत की उपज को नीलगायों के द्वारा नष्ट होते हुए देखता है और चादर ओढ़े लेटा रहता है। उसे खेत के नष्ट हो जाने का दुःख नहीं बल्कि इस बात की प्रसन्नता है कि अब उसे ठंडी रातों में खेत पर सोना नहीं पड़ेगा। यह शोषण से उत्पीड़ित किसान की वह मानसिकता है, जहाँ उसमें उज्ज्वल भविष्य की आशा बिल्कुल समाप्त हो गयी है। भाग्यवाद ने उसे और अधिक निष्क्रिय बना दिया है। ऐसे में यह कहानी एक चेतावनी की तरह हमारे सामने आती है कि क्या शोषण का चक्र यँ ही चलता रहेगा? क्या हल्कू जैसे किसान अपनी उपज की कमाई स्वयं नहीं भोग सकेगा वे ऐसे ही दरिद्र और अशिक्षित बने रहेंगे और शोषण तथा भाग्यवाद के नीचे पिसते रहेंगे?

प्रेमचंद इनका कोई उत्तर नहीं देते। संभवतः उत्तर की आवश्यकता भी नहीं है। क्योंकि इन प्रश्नों की गंभीरता में ही इनका उत्तर निहित है। हाँ, यहाँ एक विकल्प की ओर संकेत अवश्य हुआ है। वह है, किसान से मजदूर बनने का विकल्प। यह विकल्प भी विवशता के कारण सामने आता है, जोकि प्रेमचंद का आदर्श न होकर सामाजिक यथार्थ का ही एक ढंग है। पूर्ण रूप से मजदूर बनकर भी हल्कू शोषण उत्पीड़न से मुक्त हो जाएगा, ऐसी गलतफहमी प्रेमचंद को नहीं है।

प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन पर कई उपन्यासों और कहानियों की रचना की है। प्रेमचंद को किसान जीवन का महान चितेरा कहा जाता है। उन्होंने किसानों के जीवन के प्रत्येक पक्ष को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। इन रचनाओं में उनकी सहानुभूति गरीब और मेहनतकश किसानों के साथ है। किंतु वे किसानों के जीवन में व्यापक नकारात्मक पक्षों को भी उजागर करते हैं। आरंभ में प्रेमचंद अपनी रचनाओं में कोई-न-काई आदर्शवादी हल पेश करते थे, लेकिन बाद में उनका इस तरह के आदर्शवाद पर से विश्वास उठ गया था। आदर्शवाद का स्थान यथार्थवाद ने ले लिया। वे मानने लगे थे कि किसी समस्या का कोई कृत्रिम हल पेश करने के बजाय उसे पूरी तीव्रता और ईमानदारी से प्रस्तुत करना ही रचनाकार के लिए पर्याप्त है। यह कहानी इसी दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है।

शीर्षक की उपयुक्तता : कहानी का शीर्षक कहानी के मूल प्रतिपाद्य को, कथ्य को, चरित्र को व्यक्त करने वाला होता है। इस कहानी के कथ्य का मुख्य भाग पौष की एक रात्रि में घटित होता है। कहानी का आरंभ उस कंबल की चर्चा से होता है, जिसे खरीदने के लिए हल्कू ने बड़ी मुश्किल से तीन रुपये बचाये हैं किंतु वे रुपये भी उसे महाजन को देने पड़ते हैं। कंबल न खरीद पाने के कारण पूस की रात में पुरानी चादर ओढ़े उसे खेत पर जाना पड़ता है। शेष कहानी खेत पर उसी रात में घटित होती है।

पूस की यह रात ठंडी है। यह रात प्रतीकात्मक भी है। किसान के जीवन के अंधेरे की तरह यह भी अंधेरी रात है। आशा का अलाव कब का बुझ चुका है लेकिन सक्रियता की आँच भी नहीं बची है। परिणामतः खेत (जीवन) की फसल नीलगायें (शोषक) खा जाती हैं लेकिन वह भाग्य के चक्र में बँधा हुआ बैठा रहता है। पूस की रात निराशा और अंधकार की ऐसी ही रात है, जिसे यह शीर्षक पूरी तरह व्यक्त करता है।

बोध प्रश्न

- 14) 'पूस की रात' कहानी की मुख्य समस्या है। (अपना उत्तर कोष्ठक में सही उपसंख्या लिखकर दें)
- क) फसल की रक्षा की समस्या
 - ख) सर्दी से बचाव की समस्या
 - ग) किसानों के शोषण की समस्या
 - घ) कंबल खरीदने की समस्या ()
- 15) नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं, इनमें से कुछ में कही गयी बातें सही हैं, कुछ गलत। सही और गलत वाक्यों को पहचानिए।
- क) अंग्रेजी राज में जमींदारी प्रथा थी। (सही/गलत)
 - ख) किसानों को लगान और मालगुजारी नहीं देनी पड़ती थी। (सही/गलत)
 - ग) हल्कू भाग्यवादी था। (सही/गलत)
 - घ) 'पूस की रात' आदर्शवादी कहानी है। (सही/गलत)

अभ्यास

- 5) 'तकदीर की खूबी है'। हल्कू के इस कथन का कहानी के उद्देश्य से क्या संबंध है, चार पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) 'पूस की रात' को यथार्थवादी क्यों कहा गया है? चार पंक्तियों में बताइए।

कहानी : पूस की रात (प्रेमचंद)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.10 सारांश

आपने 'पूस की रात' कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा और उसके विश्लेषण का भी गंभीरता से अध्ययन किया होगा।

- 'पूस की रात' कहानी की कथावस्तु किसान जीवन से संबंधित है। हल्कू गरीब किसान है जो कर्ज से दबा हुआ है। लगातार शोषण से उसका किसानी से विश्वास उठ जाता है। आप कथावस्तु के आधार पर कहानी का विश्लेषण कर सकते हैं।
- हल्कू कहानी का नायक है। वह गरीब परंतु समझदार किसान है। आप इस चरित्र की विशेषताओं की व्याख्या कर सकते हैं।
- स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व किसानों की क्या दशा थी, इस कहानी के विश्लेषण से आप समझ सकते हैं। अब आप स्वयं 'परिवेश' का विश्लेषण कर सकते हैं।
- 'पूस की रात' की शैली यथार्थवादी, भाषा बोलचाल की एवं संवाद स्वाभाविक है। अब आप इस कहानी के संरचना शिल्प की विशेषताएँ बता सकते हैं और
- 'पूस की रात' यथार्थवादी कहानी है। इस कहानी के प्रतिपाद्य का इस आधार पर विश्लेषण भी कर सकते हैं।

1.11 उपयोगी पुस्तकें

द्विवेदी, हजारी प्रसाद : साहित्य सहचर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

शर्मा, राम विलास : प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

1.12 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

- 1) क
- 2) घ
- 3) ख
- 4) ग

- 5) घ
6) ग
7) ग
8) ख
- 9) मुन्नी कहती है कि कड़ी मेहनत के बाद भी सारी उपज कर्ज चुकाने में चली जाती है। पेट भरने के लिए मजदूरी करनी पड़ती है, तब खेती से चिपके रहने का क्या लाभ।
- 10) क) हल्कू इस बात से प्रसन्न है कि उसे ढंड में खेत पर नहीं रहना पड़ेगा।
ख) अब उसकी उपज महाजनों के यहाँ नहीं जाएगी
- 11) क) पूस ख) हार ग) ऊख घ) पुआल
ड.) अलाव च) मंड़ैया छ) डाँड़ ज) मालगुजारी
- 12) “कर चुके दूसरा उपाय। जरा सुनूँ तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये। मैं रुपये न दूँगी—न—दूँगी”
- 13) तत्सम शब्द तद्भव शब्द
अंधकार अंधेरा
वृक्ष बगीचे
पवन पत्तियों
निर्दय
- 14) ग
- 15) क) सही
ख) गलत
ग) सही
घ) गलत

अभ्यास

- 1) **संदर्भ** : उपर्युक्त उद्धरण प्रेमचंद की प्रख्यात कहानी ‘पूस की रात’ से लिया गया है। इस कहानी के नायक हल्कू की पत्नी मुन्नी का यह कथन है। हल्कू के यहाँ महाजन रुपये माँगने आया है। इस पर मुन्नी हल्कू से उपर्युक्त बात कहती है।

व्याख्या : मुन्नी चिंता व्यक्त करते हुए कहती है कि मालूम नहीं कितना कर्ज है कि चुकने का नाम ही नहीं लेता। अगर सारी उपज कर्ज चुकाने में ही जानी है

तो इससे बेहतर है कि हम खेती ही छोड़ दें। ऐसी खेती से चिपके रहने का क्या लाभ? कड़ी मेहनत के बाद तो फसल तैयार होती है। किसान का लाभ तो उसकी उपज ही है, लेकिन वही उपज कर्ज चुकाने में चली जाए तो फिर इतनी मेहनत करने का क्या लाभ? लगता है जैसे किसान का जन्म तो कर्ज चुकाने के लिए ही हुआ है। क्योंकि एक बार कर्ज लेने के बाद वह कभी उस कर्ज से छूट नहीं पाता और उसकी उपज महाजनों और जमींदारों के यहाँ पहुँचती रहती है और स्वयं किसान को अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए मजदूरी का सहारा लेना पड़ता है। व्यक्ति किसानी या कोई भी काम इसीलिए तो करता है ताकि वह अपने घर-परिवार का भरण-पोषण कर सके, लेकिन उसका वह काम सिर्फ दूसरों को लाभ पहुँचाए, उसकी मेहनत का थोड़ा-सा अंश भी स्वयं उसके लिए न बच पाये तो फिर उस काम को करते रहने या उससे चिपके रहने का क्या लाभ? इसीलिए मुन्नी का कहना है कि ऐसी खेती जो सिर्फ कर्ज चुकाने में चली जाए, उससे तो दूर रहना ही अच्छा :

विशेष:

- 1) मुन्नी द्वारा व्यक्त किये गये विचार इस कहानी का वैचारिक आधार है। हल्कू खेत के नष्ट होने पर भी क्यों बैठा रहता है, इसका उत्तर हमें उपर्युक्त कथन में मिल जाता है।
- 2) यह संवाद है और इसकी भाषा में एक गरीब, ग्रामीण किसान महिला की भाषा की स्वाभाविकता निहित है। छोटे वाक्य, तद्भव शब्द, बोलचाल की भाषा इसकी विशेषता है।
- 3) क) यहाँ हल्कू के आत्मसम्मान की भावना व्यक्त हुई है। हल्कू जानता है कि पैसे से वह बच नहीं सकता। अगर वह पैसे नहीं देगा तो उसे सहना की गालियाँ सुननी पड़ेगी, डाँट खानी पड़ेगी। उसे इस अपमान से बचने का एक ही रास्ता दिखाई देता है कि वह अपने पास बचाए गए पैसे उसे दे दे।
ख) यहाँ हल्कू की समझदारी व्यक्त हुई है। वह गरीब किसान है, लेकिन अनुभवों ने इसे इतना समझा दिया है कि वह किस तरह के समाज में जी रहा है।
ग) यहाँ हल्कू की आत्मीयता व्यक्त हुई है। जबरा के साथ भी वह वही व्यवहार कर रहा है, जो अपने किसी मित्र या रिश्तेदार के साथ करता।
घ) यहाँ हल्कू का बहानेबाजी का कौशल व्यक्त हुआ है। हल्कू यह जानते हुए भी कि नीलगायें खेत नष्ट कर रही हैं, वह बैठा रहता है, लेकिन अब पत्नी के सामने इस बात को स्वीकारना भी नहीं चाहता, इसलिए वह पेट दर्द का झूठा बहाना बनाता है।
- 3) क) पूरे दृश्य को शब्दों में जीवंत कर दिया गया है।
ख) अंतिम पंक्तियों में भाषा काव्यात्मकता लिए हुए है।
ग) तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग है परंतु भाषा की सहजता बनी हुई है।
- 4) क) गरीब किसान के जीवन की सच्चाई को उसी रूप में व्यक्त किया गया है।
ख) कहानी का अंत किसी आदर्श की स्थापना में नहीं किया गया है।

ग) चरित्र भी असामान्य और विशिष्ट नहीं है।

- 5) 'तकदीर की खूबी है।' यह कथन हल्कू की मानसिकता को व्यक्त करता है। प्रेमचंद इसके माध्यम से किसानों की भाग्यवादिता की प्रवृत्ति को रेखांकित करते हैं। किसान सोचता है कि उसके जीवन के दुःख उसके भाग्य के कारण है। जो बिना परिश्रम के सुख-चैन की जिंदगी बसर कर रहे हैं, उनका भाग्य अच्छा है।
- 6) 'पूस की रात' कहानी को यथार्थवादी इसलिए कहा गया है क्योंकि इस कहानी में प्रेमचंद ने किसान के जीवन की वास्तविकता को वैसा ही प्रस्तुत किया है, जैसी वह उस जमाने में थी। प्रेमचंद ने समस्या का आदर्शवादी समाधान भी नहीं दिया है, वरन् समाधान पाठकों के विवेक पर छोड़ दिया है।



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY